पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 (1) इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

करनाल चलो

युवक चरित्र निर्माण शिविर

समापन समारोह

रविवार, 24 जून 2012

सायं 5 से 7:30 तक

आर्य समाज, प्रेम नगर,

करनाल (हरियाणा)

स्वतन्त्र कुकरेजा, अध्यक्ष — हरेन्द्र चौधरी, महामंत्री

वर्ष-29 अंक-2 आषाढ़-2069 दयानन्दाब्द 189 16 जून से 30 जून 2012 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय युवक शिविर का भव्य शुभारम्भ

धर्म आधारित आरक्षण देश में अलगाववाद को पैदा करेगा- अनिल आर्य

सैनिक अभिवादन लेते हुए विशिष्ट अतिथिगण बायें से सर्वश्री जितेन्द्र नरूला, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, डॉ. अनिल आर्य, ठाकुर विक्रम सिंह, राजीव कुमार 'परम', सुरेन्द्र कोहली, मायाप्रकाश त्यागी व प्रवीन आर्य। सामने आर्य युवक अभिवादन करते हुए।

नई दिल्ली। रविवार, 10 जून 2012, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वाधान में विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर का ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, पुष्प विहार, दिल्ली में उद्घाटन किया गया। शिविर में 175 किशोर व युवक आठ दिन तक योगासन, दण्ड बैठक, लाठी, तलवार, जूड़ो-कराटे, डम्बल, लेजियम, बाक्सिंग, सन्ध्या-यज्ञ, भारतीय संस्कृति की जानकारी, भाषणकला, नैतिक शिक्षा की शिक्षा ग्रहण कर रहें हैं।

परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि धर्म आधारित आरक्षण देश में अलगाव को पैदा करेगा। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार की नीतियां देश को दो हिस्सों में बांटने की ओर जा रही है तथा यह भारतीय संविधान की मूल्य भावना के विरूद्ध है। आन्ध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के आदेश के बाद अब सुप्रिम कोर्ट का निर्णय सरकार की गलत नीतियों पर तमाचा है। सरकार को भविष्य में इन निर्णयों का सम्मान करते हुए ही अपनी कोई नीति निर्धारित करनी चाहिए। वोट बैंक की राजनीति के कारण ही आज देश रसातल को जा रहा है। डॉ. आर्य ने कहा कि आज के संदर्भ में महर्षि दयानन्द ही युवाओं के प्रेरणास्त्रोत हो सकते हैं, देश के 60 प्रतिशत युवा उनके महान व्यक्तित्व से प्रेरणा पाकर समाज में आमूल-चूल परिवर्तन ला सकते हैं। आवश्यकता सिर्फ इस बात की है कि युवाओं तक उनके सन्देश को पहुंचाया जाए।

समारोह अध्यक्ष श्री राजीव कुमार (चेयरमैन, परम डेयरी ग्रुप) ने कहा कि चरित्रवान युवाओं की आज समाज व राष्ट्र को आवश्यकता है। यह प्रशिक्षित युवक राष्ट्र की धरोहर बनेंगे तभी भ्रष्टाचार मुक्त समाज ही वैदिक समाजवाद होगा। राष्ट्र निर्माण पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह ने कहा कि देश में अराजकता, भ्रष्टाचार चरमसीमा पर है, युवाओं ने ही देश को बदलना है। उन्होंने आहवान किया कि हमें ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर वेद का संदेश जन जन तक पहुंचाना चाहिए तथा अगले वर्ष उन्होंने एक विशाल शिविर मेरठ में लगाने की घोषणा की।

समाजसेवी श्री जितेन्द्र नरूला ने ओ३म् ध्वज फहरा कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर आर्य नेता मायाप्रकाश त्यागी, चौ. ब्रह्मप्रकाश मान, डॉ. ओमप्रकाश मान, कवि विजय गुप्त, राष्ट्रीय महामंत्री महेन्द्र भाई, एस्कॉर्ट्स कम्पनी से राकेश भार्गव, ए.डी. पब्लिक स्कूल के प्रि. सुभाष श्योराण, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सन्ध्या बजाज, रामकुमार सिंह, योगेन्द्र शास्त्री, दक्षिण दिल्ली मंडल के महामंत्री चत्तर सिंह नागर, प्रवीन आर्य, अशोक जेठी, आचार्य दीपचन्द, प्रि. नीता जेठी, रविन्द्र मेहता, यशोवीर आर्य, ओम सपरा, देवदत्त शर्मा, ओमवीर सिंह, महावीर सिंह आर्य, हरि चन्द आर्य, सुशील आनन्द, विनोद कद, विजय कपूर, कर्नल ए.के. शर्मा, प्रवीण आर्या, डॉ. मुकेश सुधीर, माता सुदर्शन खन्ना, के.एल. राणा, प्रकाश वीर शास्त्री, आचार्य सुधांशु जी आदि उपस्थित थे। आचार्य भानु प्रकाश शास्त्री के मधुर भजनों का सभी ने आनन्द लिया। ऋषि लंगर का आनन्द लेकर सभी विदा हुए।

फरीदाबाद युवक शिविर का समापन

रविवार 24 जून 2012, सायं 5 से 7:30 तक स्थान: ग्रीन फील्ड प. स्कूल, ग्राम सुनपेड़, बल्लभगढ़ फरीदाबाद में होगा। **-जितेन्द्र सिंह आर्य**

समाजसेवी श्री जितेन्द्र नरूला को शाल व स्मृति चिन्ह से सम्मानित करते डॉ. अनिल आर्य, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, श्री सुरेन्द्र कोहली व श्री महेन्द्र भाई। द्वितीय चित्र में चौ. ब्रह्मप्रकाश मान को सम्मानित करते डॉ. अनिल आर्य, डा. वीरपाल विद्यालंकार, श्री मायाप्रकाश त्यागी व श्री मनोज मान।

वैदिक सिद्धान्त

- सत्यावती गुप्ता

वैदिक संस्कृति को यदि एक शब्द में कहना हो तो वह शब्द है 'यज्ञ'। यज्ञ को अग्निहोत्र तथा क्रतु भी कहते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि—हे मनुष्यों! तुम सौ वर्षों तक शुभ कर्म करते हुए सुखपूर्वक जियो। शुभ कर्म किसे कहते हैं? इसका उत्तर यह है कि जिस कार्य को करने से अपना भी मंगल होता है तथा अन्य प्राणियों का भी भला होता है उसे 'शुभ कर्म' कहते हैं। शुभ कर्मों की गणना की जाये तो वह असंख्य है, यथा—भूखे को भोजन खिलाना, प्यासे को पानी पिलाना, दीन-दु:खी को वस्त्र पहनाना, रोगी की सेवा करना, अस्पताल बनवाना, विद्यालय बनवाना, निर्धन विद्यार्थियों को पढ़ाना आदि सभी परोपकारमय कर्म शुभ कर्म हैं। इन सभी शुभ कर्मों को हम यज्ञ का ही एक रूप कह सकते हैं, क्योंकि यज्ञ के तीन अर्थ हैं—देवपूजा, संगतिकरण और दान। वर्तमान समय में यदि हम देखें तो इनके अभाव में घर-परिवार, समाज, राष्ट्र सभी दु:खों के भागी बन रहे हैं। यज्ञ का अभिप्राय मात्र अग्नि में सुगन्धित पदार्थ-घृत सामग्री डालना ही नहीं है, अपितु यज्ञ की भावना को व्यवहार में उतारना है। जैसेकि यज्ञ करते समय जब हम सामग्री या घृत को अपने हाथ में लेते हैं, तो हमारे हाथों की कुहनियाँ मुड़ी रहती हैं, किन्तु जब हम स्वाहा कहते हैं तो हाथ सीधा हो जाता है। इसी विधि को यदि हम व्यवहार में अपना लें तो सब ओर सुख शान्ति बढ़ जाए।

यज्ञ का पहला अर्थ है देवपूजा अर्थात् देवताओं की पूजा करना। देव कहते हैं उसे जो अपने पास से अपने गुण, कर्म, स्वभाव आदि जो श्रेष्ठ पदार्थ हैं वे दूसरों को दें। पूजा का अर्थ है यथायोग्य सत्कार करना। दो प्रकार के देवता संसार में देखे जाते हैं—एक तो जड़ देवता और दूसरे चेतन देवता। जड़ देवताओं की श्रेणी में सूर्य, चन्द्रमा, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, वृक्ष आदि आते हैं। मनुष्य इन सबसे उपकार लेता है साथ ही इनका उपयोग करने से इनको प्रदूषित भी करता है। इसलिये इनके द्वारा किये गये उपकार को मानने व शुद्ध करने के लिए विद्वानों ने कहा—''अग्निर्वै देवानां मुखम्'' अर्थात् अग्नि ही सब जड़ देवताओं का मुख है। जो कुछ भी उत्तम पदार्थ अग्नि देवता को 'हवन' के माध्यम से दोगे तो अग्नि देवता उसको सूक्ष्म परमाणुओं में विभक्त करके सब देवताओं को दे देंगे। इसलिए वर्तमान में फैल रहे प्रदूषण को दूर करने और वातावरण को शुद्ध करने के लिए अग्निहोत्र सर्वोत्तम उपाय है।

दूसरे देवता चेतन देवता हैं, वे हैं हमारे माता-पिता, गुरु, अतिथि, पति और पत्नी। इन सबकी सेवा पाँव दबाकर, गुण, ज्ञान, विद्या, धर्माचरण ग्रहण करने से होती है। इनके सत्कार में सदा शुभ, पवित्र, मधुर, वचन बोलने चाहिए तथा वस्त्र, भोजनादि के द्वारा इनको प्रसन्न रखना भी यज्ञ का ही एक भाग है। इनकी अवहेलना करने से आज परिवारों में विवाद कलह, अशान्ति, तनाव आदि मानसिक रोग बढ़ते जा रहे हैं। इन रोगों को हटाने के लिए यज्ञ के इस भाग को भी अपनाना अत्यावश्यक है।

यज्ञ का दूसरा अर्थ है संगतिकरण। यह तो हम सभी जानते हैं कि जिसकी जैसी संगति होती है वह वैसा ही बन जाता है, इसलिए अच्छे विद्वानों, सत्पुरुषों, ज्ञानी व्यक्तियों की संगति में रहने से मनुष्य सुपथ पर चलकर आयु, यश, कीर्ति, धर्म, अन्न, धन, बलादि प्राप्त कर सकता है। यज्ञ करने से एकता, संगठन की भावना बनती है जोकि आज हमारे राष्ट्र को संगठित बनाने में अत्यन्त आवश्यक है। आज के परिवेश में जो जातिवाद, वंशवाद, छुआछूत, दहेज, प्रान्तवाद आदि राष्ट्रीय समस्याएँ हैं उन सबका निदान 'यज्ञीय संगतिकरण' संगठन बनाकर हो सकता है।'

यज्ञ का तीसरा अर्थ दान है। यज्ञ में जो हवियाँ दी जाती हैं वे सब देवताओं को प्राप्त होती हैं। देवगण उन्हें स्वयं न खाकर पुनश्च हमें लौटा देते हैं। हमारे राष्ट्र में जब तक एक-दूसरे को खिलाकर खाने की प्रवृत्ति थी तब तक सब ओर शान्ति सुख-चैन था। आज स्वयं ही खाने की स्वार्थमयी प्रवृत्ति होने से सर्वत्र दु:खाग्नि फैल रही है। 'स्वाहा' कहकर आहुति दी जाती है। 'स्वाहा' का अर्थ है त्याग करना और 'इदन मम' का अर्थ है 'यह मेरा नहीं है' अर्थात् भक्त भगवान से यज्ञ में प्रार्थना करता है कि हे प्रभो! मैं आपकी प्रसन्नता, कृपा को पाने के लिए यह यज्ञ कर रहा हूँ, इससे सब प्राणी सुखी हों, ये सब आपका ही है मेरा कुछ भी नहीं है। ऐसी भावना ही दानमयी ज्ञान-मयी, परमार्थमयी भावना होती है जिसका पालन करने पर ईश्वर याज्ञिक के मन के सभी दोषों, दुर्गुणों और दुर्व्यसनों को दूर करके उसे अच्छे गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ प्रदान करते हैं। अत: यज्ञ ईश्वर भक्ति करने का भी सर्वोत्तम उपाय है। आज मनुष्य ईश्वर भक्ति के नाम पर अनावश्यक पाखण्ड, गुरुडमवाद, तन्त्रादि में फँसते जा रहे हैं। इन सबको दूर करने के लिए सत्य सनातन वैदिक रीति से यज्ञरूपी तीर्थ को प्रत्येक गृहस्थ में अपनाने की आवश्यकता है।

महर्षि मनु ने कहा है—''पञ्चैतास्तु महायज्ञान् यथाशक्ति न हापयेत्'' अर्थात् प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि पाँच महायज्ञों को यथाशक्ति किया करे। ये पाँच महायज्ञ हैं—

1. ब्रह्मयज्ञ 2. देवयज्ञ 3. अतिथियज्ञ
4. पितृयज्ञ 5. बलिवैश्वदेवयज्ञ

1. ब्रह्मयज्ञ में ईश्वर की उपासना अर्थात् सन्ध्या की जाती है।
2. देवयज्ञ में अग्नि जलाकर वेदमन्त्रों का पाठ करके सुगन्धित पदार्थ होम किए जाते हैं।
3. अतिथि यज्ञ का अर्थ है कि जो विद्वान् घर में आए उनका उचित सत्कार करके उनसे धर्म, ईश्वर व व्यवहार सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करना।
4. पितृयज्ञ में माता-पिता आदि घर के बड़े बुजुर्गों की सेवा करने के साथ-साथ अपने बेटे-बेटियों को अच्छी शिक्षा देने, उनको सभ्य नागरिक बनाना होता है।
5. बलिवैश्वदेवयज्ञ के अन्तर्गत जो भोजन घर में बनता है उसका मिष्ठान भाग अग्नि में आहुति देना तथा कुत्ता, बिल्ली, चींटी, कौआ, कोढ़ी अनाथ आदि को भोजन देना है।

अन्ततोगत्वा सभी शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय, वैश्विक उन्नति का साधन यज्ञ है। यज्ञ को पूर्णरूपेण व्यवहार में लाने पर सारी मानव जाति सुखी, शांतिमय, समृद्ध और आनन्दित रह सकती है। अन्त में यही कामना व प्रार्थना है—

हे ईश! सब सुखी हों कोई न हो दुखारी।
सब हो निरोग भगवन् धन-धान्य के भण्डारी॥
सब भद्र भाव देखें सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी॥
भूखा न कोई सोवे सृष्टि में जीवधारी॥

भजन-यज्ञ महिमा

यज्ञ सफल हो जाए, भगवन यज्ञ सफल हो जाए,
यज्ञ सफल हो जाए, मेरा यज्ञ सफल हो जाए।
श्रद्धा से है यज्ञ रचाया, वेदी को है खूब सजाया,
पवन शुद्ध हो जाए, मेरा यज्ञ सफल हो जाए।
घृत सामग्री शुद्ध चढ़ाया, मेवा चन्दन मिष्ठ मिलाया,
रोग शोक मिट जाए, मेरा यज्ञ सफल हो जाए।
यज्ञ सुगन्धि जहाँ भी जाए, जीवमात्र को सुख पहुँचाए,
सबके मन को भाए, मेरा यज्ञ सफल हो जाए।
श्रेष्ठ कर्म है यज्ञ बताया, यथाशक्ति से जो कर पाया,
ब्रह्मार्पण हो जाए, मेरा यज्ञ सफल हो जाए।
राग, द्वेष का दोष मिटा दो, प्रेम-भाव का कोष बढ़ा दो,
यज्ञ योग बन जाए, मेरा यज्ञ सफल हो जाए।
यज्ञ यज्ञपति को मिल जाए, पूर्ण कामना सब हो जाए,
दिव्य आशीष दिलाए भगवन, यज्ञ सफल हो जाए।

बहरोड़ (अलवर) में युवक चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद राजस्थान के तत्वावधान में विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर दिनांक 27 मई से 3 जून 2012 तक डी.वी.एम. पब्लिक स्कूल, बहरोड़, अलवर में आयोजित किया गया। शिविर में 130 युवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर संयोजक श्री रामकृष्ण शास्त्री को सम्मानित करते राष्ट्रीय महामंत्री श्री महेन्द्र भाई, रामकुमार सिंह आर्य व रामदेव आर्य। द्वितीय चित्र में पुरस्कृत युवक अतिथिगण के साथ। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् राजस्थान को अनेकों शुभकामनाएं।

आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव दिनांक 1,2,3, जून 2012 को सम्पन्न हुआ। आचार्य अखिलेश्वर जी की गीता कथा हुई व पं. कुलदीप आर्य के मधुर भजन हुए। चित्र में मुख्य अतिथि डॉ. अशोक कु. चौहान श्रीमती सरला पाल की पुस्तक का विमोचन करते हुए। संचालन मंत्री श्री अजय सहगल ने किया। प्रधान श्री अजय चौहान ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर श्री आनंद चौहान, श्री रामनाथ सहगल, डॉ. अनिल आर्य, राजीव चौधरी, लोकेशदत्त मुलतानी आदि भी उपस्थित थे।

चण्डीगढ़ में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आयोजित

रविवार 20 मई 2012, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान में डी.ए.वी सीनियर सै. स्कूल, सैक्टर–7, चण्डीगढ़ में देश की वर्तमान परिस्थितियां व उसमें आर्य समाज की भूमिका पर विचार करने के लिए विशाल राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज ने की। सभा का संचालन श्री गोपाल शर्मा ने किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश, आचार्य परमदेव मीमांसक, श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, श्री रमाकान्त सारस्वत, श्री विरजानन्द, श्री धर्मवीर, प्रि. रमेश चन्द्र जीवन, श्री वीरेन्द्र पवांर आदि ने सम्बोधित किया।

उपरोक्त चित्र में परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री श्री महेंद्र भाई सम्बोधित करते हुए। इस अवसर पर दिल्ली प्रांतीय संचालक श्री राम कुमार सिंह आर्य, देव कुमार पवांर, प्रीति पवांर भी उपस्थित थे।

स्वामी दयानन्द जी का पत्र

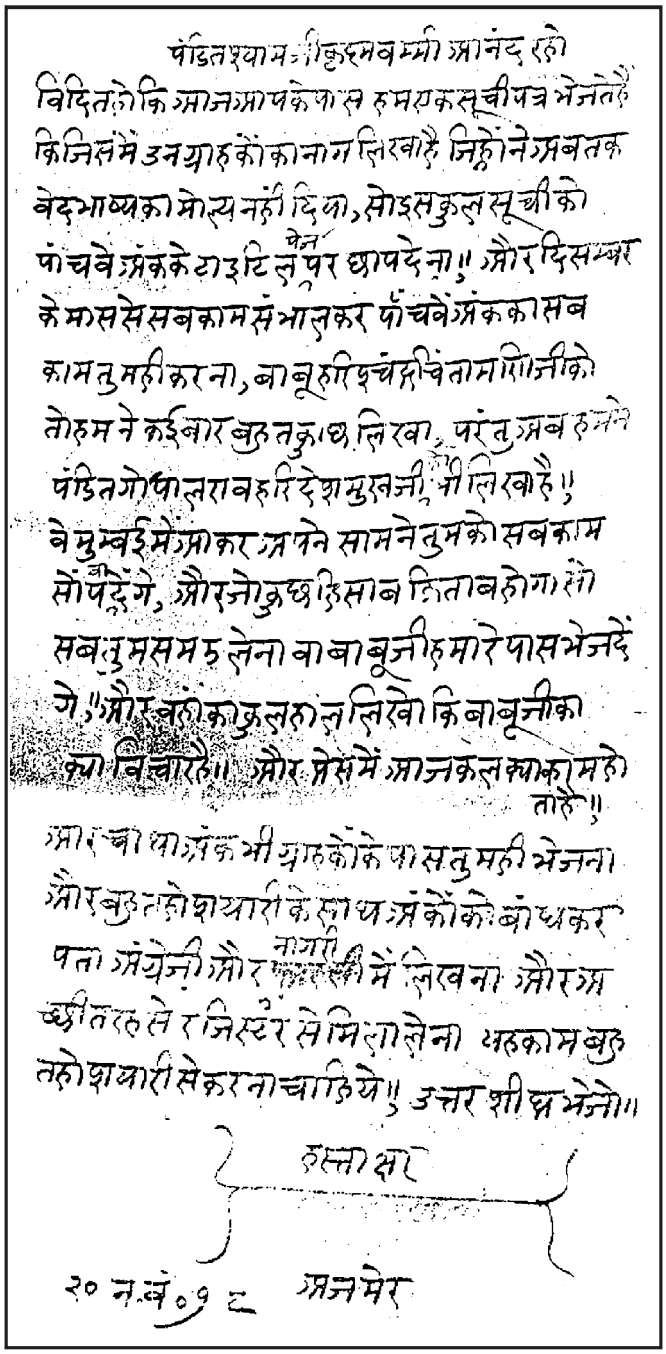

पंडित श्यामजी कृष्णवर्मा आनंद रहो
विदित हो कि आज आपके पास हम एक सूचीपत्र भेजते हैं
कि जिसमें उन ग्राहकों का नाम लिखा है जिन्होंने अब तक
वेदभाष्य का मोल्य नहीं दिया, सो इस कुल सूची को
पांचवें अंक के टाइटिल पेज पर छाप देना॥ और दिसम्बर
के मास से सब काम संभालकर पांचवें अंक का सब
काम तुमही करना, बाबू हरिश्चंद्र चिंतामणि जी को
तो हमने कई बार बहुत कुछ लिखा, परंतु अब हमने
पंडित गोपालराव हरि देशमुख जी को भी लिखा है॥
वे मुम्बई में आकर अपने सामने तुमको सब काम
सोंप देंगे, और जो कुछ हिसाब किताब होगा सो
सब तुम समझ लेना बाबा बाबू जी हमारे पास भेज दें
गे॥ और वहां का कुशल लिखो कि बाबू जी का
क्या विचार है॥ और प्रेस में आजकल क्या काम हो
ता है॥
और जो पांचवां अंक भी ग्राहकों के पास तुमही भेजना।
और बहुत होशियारी के साथ अंकों को बांधकर
पता अंग्रेजी और नागरी में लिखना और अ
च्छी तरह से रजिस्टर से मिला लेना यह काम बहुत
होशियारी से करना चाहिये॥ उत्तर शीघ्र भेजो॥

हस्ताक्षर

२० नवं० ७८ अजमेर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय शिविर की सचित्र झलकियां

समारोह के मुख्य अतिथि श्री राजीव कुमार 'परम' को सम्मानित करते डॉ. अनिल आर्य, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, डॉ. ओम प्रकाश मान व आचार्य गवेन्द्र शास्त्री। द्वितीय चित्र में ठाकुर विक्रम सिंह जी को सम्मानित करते डॉ. अनिल आर्य, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, राकेश भार्गव, चतर सिंह नागर व महेन्द्र भाई।

केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् दिल्ली के राजेन्द्र नगर शिविर की झलकियां

केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वाधान में आर्य समाज राजेन्द्र नगर, दिल्ली में दिनांक 20 मई से 27 मई 2012 तक आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। बायें बालिकायें समूहगान प्रस्तुत करते हुए व दायें व्यायाम प्रदर्शन करते हुए। शिविर में 72 बलिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

सोनीपत में आर्य वीरांगना शिविर का शुभारम्भ

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा के तत्वावधान में दिनांक 11 जून से 17 जून 2012 तक आर्य वीरांगना शिविर का भव्य आयोजन दिल्ली विद्यापीठ देवडू रोड सोनीपत में किया गया। शिविर में 80 बालिकाओं ने भाग लिया। शिविर उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. अनिल आर्य विद्यालय प्रबन्धक श्री वीर सिंह सैनी को शाल व स्मृति चिन्ह से सम्मानित करते हुए साथ में प्रांतीय अध्यक्ष श्री मनोहर लाल चावला, श्री सूर्य देव व्यायामाचार्य, वीरेन्द्र योगाचार्य व श्री राम कुमार सिंह आर्य। द्वितीय चित्र में बालिकायें अभिवादन करते हुए। समारोह का संचालन संयोजक श्री हरिचन्द स्नेही ने किया। प्रेस सचिव श्री हरबंस लाल अरोड़ा, डॉ. वरूण देव शर्मा, श्रीमती दीपा आर्या, प्रि. शालिनी चावला, श्रीमती सन्तोष आर्या आदि भी उपस्थित थीं।

आर्य जगत् की विशिष्ट कर्मठ महिलायें व गाजियाबाद उप सभा ने लगाया युवक शिविर

आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर राजेन्द्र नगर, दिल्ली को सफल बनाने वाली विशिष्ट आर्य महिलायें सुधा वर्मा, शबनम गुलाटी, सीमा तोमर, सन्तोष वधवा, स्वर्ण गम्भीर, राज सलूजा, कमला मसन्द, रचना आहूजा, अर्चना पुष्करना व वेद प्रभा बरेजा आदि। हमारी अनेकों शुभकामनाएं व द्वितीय चित्र में आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद के तत्वावधान में दिनांक 20 मई से 27 मई 2012 तक श्री छोटे लाल मैमोरियल हाई स्कूल, ग्राम अटोर, नंगला, गाजियाबाद में आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। चित्र में स्वामी आर्य वेश जी सम्बोधित करते हुए। साथ श्री श्रद्धानन्द शर्मा, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, श्री राजकुमार त्यागी, आर्य नेता श्री माया प्रकाश त्यागी, नरेन्द्र आर्य व सत्यवीर चौधरी।

स्मरण : श्री ज्ञानप्रकाश गुप्ता

आर्य समाज अशोक विहार-1, दिल्ली व बिरला लाईन के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री ज्ञान प्रकाश गुप्ता (पति श्रीमती स्वर्णा गुप्ता) को नमन व स्मरण।
उनका जीवन अनेकों के जीवन में उजाला देता रहे। - सीमा व रोहित।

श्री वृतपाल भगत (प्रधान, आर्य समाज पीतमपुरा, दिल्ली) की पूज्य माता श्रीमती मोहन देवी आयु 94 का दिनांक 2 जून 2012 को निधन हो गया। **विनम्र श्रद्धांजलि**

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयंक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9910649696, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970